बी.ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
काव्य गुण

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कॉलेज,
डुमरॉंव - बक्सर

काव्य गुण – भारतीय काव्यशास्त्र

गुण का अर्थ है वैशिष्ट्य शोभाकारी धर्म या दोष का अभाव। आचार्य भरत के अनुसार काव्य में दोष का विपर्यय गुण माना जाता है,

"एत एव विपर्यस्ता गुणा: काव्येषु कीर्तिता:।"

विपर्यय के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कोई इसका अर्थ दोष का अभाव कहता है, कोई अन्यथा भाव और कोई विपरीत भाव। आचार्य वामन गुण के प्रतिष्ठता आचार्य हैं। उनके अनुसार "काव्य शोभाया: कर्त्तारो-धर्मा गुणा:" अर्थात् गुण काव्यमूल शोभा (सौंदर्य) के तत्व हैं। गुण शब्द और अर्थ के धर्म हैं और काव्य के लिए अनिवार्य हैं।

ध्वनि सिद्धांत के निरुपण के बाद गुण का अर्थ निर्दोषिता के रूप में ग्रहण किया गया। आनंदवर्धन ने गुणों के स्वतंत्र अस्तित्व को न मानकर उन्हें रसाश्रित माना है। मम्मट ने भी इन्हीं का अनुसरण किया है। वे लिखते हैं,

"ये रसस्यांगिनो धर्मा: शौर्यादयइवात्मन:
उत्कर्ष हेतव: ते स्यु: अचलस्थितयो गुणा:।"

अर्थात् शौर्य जैसे आकार का गुण नहीं अपितु आत्मा का गुण है उसी प्रकार काव्य के गुण काव्य-शरीर के गुण नहीं बल्कि काव्य की आत्मा के गुण हैं। आचार्य विश्वनाथ, पंडितराज जगन्नाथ आदि ने भी मम्मट का अनुसरण किया है। इस तरह कह सकते हैं कि काव्य की शोभा को संपादित करने वाले या काव्य की आत्मा को प्रकाशित करने वाले तत्व गुण हैं।

गुणों की संख्या के विषय में मतभेद है। आचार्य भरत मुनि ने दस गुण बतलाए हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित गुण हैं- श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, पदसौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, उदारता और कांति। उन्होंने लिखा है, -

"श्लेषः प्रसादः समता समाधिः
माधुर्यमोजः पदासौकुमार्यम्।
अर्थस्य व्यक्तिरुदारता च कांतिश्च
काव्यस्य गुणाः दशैते।।"

आचार्य दण्डी ने गुणों की संख्या और नाम तो भरत मुनि के अनुसार ही लिखे है किन्तु उनके लिखे हुए गुणों के लक्षण भिन्न हैं। आचार्य वामन के अनुसार शब्द के दस और अर्थ के दस गुण होते हैं। इस प्रकार इनकी संख्या बीस हो जाती है। महाराजा भोज के मत के अनुसार गुणों की संख्या और भी अधिक है। आनंद-वर्धन ने रस के धर्म रूप में गुण को माना और इस प्रकार चित्त की तीन अवस्थाओं - द्रुति, दीप्ति और व्याप-कत्व के आधार पर केवल तीन गुणों - माधुर्य, ओज, और प्रसाद को स्वीकार किया। वामन के द्वारा दस गुण इन्हीं तीन गुणों के भीतर समाविष्ट कर लिए गए और मम्मट ने इस गुणों का खण्डन कर तीन गुणों को सिद्ध किया। आचार्य मम्मट के इस मत को प्रायः सभी परवर्ती आचार्यों ने स्वीकार किया है। इन तीन गुणों के नाम है - माधुर्य, ओज, प्रसाद।

काव्य रचना के जिस गुण से हृदय आनंद से द्रवीभूत हो जाये उसे माधुर्य गुण कहते हैं। इसमें लंबे समास नहीं होते। ट, ठ, ड, ढ वर्णों का प्रयोग

यथासंभव इसमें नहीं किया जाता। अनुनासिक वर्णों के प्रयोग से इसका सौंदर्य और बढ़ जाता है। यह गुण शृंगार, करुण तथा शांत रस में प्रायः पाया जाता है। इसे परिभाषित करते हुए मम्मट ने कहा है–

"आह्लादकत्व माधुर्य शृंगारे द्रुति कारणम्।
करुणे विप्रलम्भे तत् शांते चातिशयांवितम्॥"

"वसंत के चपल चरण!
पिकी पुकारती रही,
पुकारते धरा गगन।
मगर कहीं रुके नहीं,
वसंत के चपल चरण।"

ओजगुण के कारण किसी रचना में उत्साह एवं उमंग का संचार करने की क्षमता आती है। ओज की प्रतिष्ठा के लिए रचना में 'ट' वर्ग के सभी वर्णों, सभी वर्गों के प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के योग से बने संयुक्त शब्दों 'र' के संयोग से बने शब्दों एवं लम्बे-लम्बे समास वाले शब्दों की प्रचुरता आवश्यक होती है। इस गुण का संबंध रौद्र, वीर और वीभत्स रसों से है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज,
डुमरॉव - बक्सर
(बिहार)